



# महान योद्धा ललितादित्य मुक्तापीड़ जिसने तुर्कों और अरबियों को उनके घर में घुसकर मारा

विश्व इतिहास के महानतम राजाओं में से एक प्रमुख नाम भारत के ललितादित्य मुक्तापीड़ का है। ललितादित्य मुक्तापीड़ कश्मीर के कर्कोटा वंश के हिन्दू सम्राट थे। उनके काल में कश्मीर राज्य तथा भारत राष्ट्र का विस्तार संपूर्ण मध्य एशिया और तिब्बत, चीन तक पहुंच गया। उन्होंने अरब के मुसलमान आक्रान्ताओं को सफलतापूर्वक दबाया, तिब्बती सेनाओं को पीछे धकेला और चीन को पराजित करके संधि करने को विवश किया। उनका राज्य पूर्व में बंगाल तक, दक्षिण में कोंकण तक पश्चिम में तुर्किस्तान और उत्तर-पूर्व में तिब्बत तक फैला था। उनके काल में कश्मीर उत्तरी भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य था। इतिहासकार आर.सी. मजूमदार के अनुसार कार्कोट सम्राट के नाम से प्रसिद्ध दुर्लभ वंश के शासक प्रतापादित्य के तृतीय पुत्र ललितादित्य मुक्तापीड़ एक कुशल घुड़सवार और योद्धा थे। उन्होंने कश्मीर के दक्षिण में क्षेत्रों में विस्तार के अभियान चलाए। उनके साम्राज्य का विस्तार काराकोरम पहाड़ों के पार तिब्बत के पठार से आगे चीन तक और पश्चिम में कैस्पियन सागर कर दिया। इस अवधि के दौरान, वह सम्राट हर्ष के उत्तराधिकारी कन्नौज के शासक यशोवर्मन के साथ युद्ध में विजयी हुए।

## जनहित के कार्यों से मनाया विजय का उत्सव

विजय से समृद्ध और प्रसन्न राजा अपने देश लौट गया। उन्होंने जालंधर, लाहौर और अन्य छोटे प्रांतों को अपने अधीनस्थों को दे दिया। अपनी विजय को चिह्नित करने के लिए, उन्होंने अन्य राजाओं को अधीनता का प्रतीक पहनने के लिए बाध्य किया। तुर्कों ने अपने दोनों हाथों को अपनी पीठ के पीछे बांध कर और सिर झुका कर ललितादित्य का स्वागत किया। दक्षिण के लोगों को उन्होंने अपने कपड़ों में एक पूंछ पहनने के लिए प्रेरित किया, जो जमीन को छूती थी। कोई कस्बा या गांव या द्वीप, नदी या समुद्र नहीं था, जहां उन्होंने विजयी स्मारक नहीं बनाए। इन स्मारकों को उन्होंने घटना या समय के अनुसार नाम दिया था। जब वह अपने अभियान पर निकला, तो उसे कुछ जीत का अहसास हुआ उन्होंने सुनिश्चितपुर या निश्चितता नामक शहर बसाया। अपने विजय के गौरव में, उन्होंने दर्पितपुरा (दर्जितपुर) या गौरव का शहर बसाया। इसमें उन्होंने मुक्तिकेशवा की एक छवि स्थापित की। जब उसकी विजय पूर्ण हो गई और वे अपनी जीत के फल का आनंद ले रहे थे तो उन्होंने एक और शहर बसाया, जिसका नाम फलपुरा (फल के प्रभाव को दर्शाने वाला) रखा। उन्होंने पर्णोत्सर्ग (पर्णोत्स)

नामक शहर बसाया और वहां एक महल का निर्माण किया जिसका नाम क्रिरम्मा (क्रीचरारम) था, यह नाम भी भवन के उद्देश्य को दर्शाता है।

अपनी विजय का प्रतिक ललितपुरा शहर को बसाया और उसमें सूर्य की एक छवि स्थापित की। इस शहर के प्रबंध के लिए उन्होंने कन्याकुब्ज शहर को समीपवर्ती भूमि और गांवों का राजस्व दिया। हुशकापुरा में उन्होंने भगवान मुक्तास्वामी की एक प्रतिमा बनवाई और बौद्धों के लिए एक स्तूप के साथ एक बड़ा मठ बनवाया। उन्होंने एक कोटी (दस लाख) सिक्के अपनी विजय के प्रतिफल में प्राप्त किए। अपनी वापसी पर उन्होंने अपनी शुद्धि के लिए भट्ट ब्राह्मणों को ग्यारह कोटि सिक्के का दान कर दिए। उन्होंने जशतरुद्र के पत्थर को उठाया और कई गांवों और जमीनों को इसके लिए दिया। इसके अलावा, उन्होंने सूर्य के मंदिर के चारों ओर पत्थर की एक मजबूत दीवार खड़ी कर दी। उन्होंने अंगूरों की खेती करने वालों का एक शहर बसाया और लोगों के आध्यात्मिक लाभ के लिए कई गांवों के साथ भगवान विष्णु के मंदिरों को भेंट किए।

### ललितादित्य की रुचियां

सम्राट ललितादित्य मुक्तापीड सैन्य अभियान के अलावा कला-संस्कृति आदि क्षेत्रों में भी काफी रुचि रखते थे। उनके शासनकाल में कला और व्यापार को महत्व मिला। धार्मिक उत्सव आयोजित किए गए और विशेष सुविधाओं के साथ-साथ चित्रकारों और मूर्तिकारों को समर्थन देने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया गया। वे स्वयं एक सफल लेखक और वीणावादक थे। पृथ्वीनाथ कौल बमजई ने लिखा है कि ललितादित्य की युद्ध में जीत को ही उनके शासनकाल की सफलता नहीं माना जा सकता है। उन्होंने अन्य कलात्मक और सामाजिक विषयों में भी रुचि दिखाई। ललितादित्य मुक्तापीड अपनी राजधानी श्रीनगर से परिहासपुर (कश्मीर घाटी में श्रीनगर के पास एक छोटा सा शहर) ले गये थे। कल्हण ने राजतरंगिणी में लिखा है कि ललितादित्य ने परिहासपुर में अपना निवास और चार मंदिर बनवाए। मंदिरों में विष्णु (मुक्तिकेशवा) विशेष था। कल्हण के अनुसार सम्राट ने मुक्तिकेशवा विष्णु की छवि बनाने के लिए 84,000 तोले सोने का उपयोग किया था। एक अन्य मंदिर में उन्होंने परिहाससेन की छवि के लिए चांदी के कई परतों का इस्तेमाल किया। उन्होंने तांबे में बुद्ध की एक प्रतिमा भी बनाई थी जो कल्हण के अनुसार आकाश तक पहुंच गई। ललितादित्य के समय स्थापत्य का सबसे उत्कर्ष बिन्दू मार्तंड मंदिर है। ललितादित्य की मृत्यु के बाद परिहासपुर ने एक राजधानी के रूप में अपना दर्जा खो दिया। उनका बेटा कुवल्यापीड राजधानी को पुनः शाही निवास श्रीनगर में ले गया।

इसके अलावा उन्होंने परिहासपुर में विष्णु की एक रजत प्रतिमा स्थापित की, जिसका नाम शिप्रहेश-केशव था। इसके अलावा महावराह की एक सोने की प्रतिमा भी बनवाई। उन्होंने गोवर्धनधारी की एक रजत प्रतिमा भी स्थापित की। उन्होंने एक-एक टुकड़ा लगाया, पत्थर को चौबीस हाथ ऊंचा गोवर्धन पर्वत बनाया, जिसके ऊपर उन्होंने गरुड़ की प्रतिमा स्थापित की थी।

इसी तरह उन्होंने बुद्ध स्तूप बनवाया, जो वर्गाकार था। इसमें एक चौगान, एक चैत्य और एक मठ भी था। श्री परिषकेशव का निर्माण चौरासी हजार तोला चांदी से किया गया था। उनकी रानी का नाम कमलावती था, जिन्होंने विष्णु कमलकेशव की एक चांदी की प्रतिमा स्थापित की। उनके मंत्री मित्रशर्मा ने शिव की एक प्रतिमा बनवाई जिसका नाम मित्रेश्वर है और उनके एक अधीनस्थ राजा ने

श्रीकय्यास्वामी नामक एक भगवान का निर्माण किया। उन्होंने कायाविहारा नाम का एक विहार भी बनवाया, जहां एक बौद्ध पुरुष सर्वजंगमित्र ने बुद्ध की पवित्रता प्राप्त की। उनके एक अन्य मंत्री जिनका नाम तुषा कृष्ण कांगुना था, ने चणकुना नामक एक विहार का निर्माण किया। यह विहार इस राजा के चरित्र के समान विषाल था और यहां बुद्ध की एक सुनहरी छवि भी स्थापित की गई। राजा ने परिहासपुर में गरीबों के लिए एक स्थायी आश्रय स्थल का निर्माण किया, जिसमें उन्होंने भोजन से भरी एक लाख थालियां भेंट कीं। उन्होंने अन्य देशों के विवेकपूर्ण पुरुषों को आमंत्रित किया और मंगोलिया का भूषण खां एक रसायनज्ञ, तोखरिस्तान से कंगणवक्ष के चांगकुन भाई को लाया। राजा ने इस आदमी के साथ बुद्ध की एक प्रतिमा का आदान-प्रदान किया, जिसे वह मगध से रहस्यमयी गुणों के कुछ आभूषणों के लिए लाया था।

### कल्हण के काल में किवदंतियां

कल्हण ने लिखा है कि ललितादित्य की आज्ञा को देवताओं ने भी माना था। एक बार, ठंड के मौसम में पूर्वी सागर के किनारे पर रहने के दौरान, ललितादित्य ने कपित्थ फल की मांग की। उनके परिचारक हैरान थे, क्योंकि यह फल उस मौसम और उस जगह पर समान्य तौर पर नहीं मिलता था। फिर एक कथा का वर्णन आता है कि ललितादित्य के लिए यह फल इंद्र के दिव्य दूत स्वर्ग से लाए। दूत ने उसे समझाया कि उनके पिछले जन्म में उन्होंने अकाल के दौरान भूखे ब्राह्मण को अपना भोजन और पानी दिया था। इस अच्छे काम के परिणामस्वरूप, ललितादित्य स्वर्ग में एक सौ इच्छाओं के हकदार बन गए। उदाहरण के लिए, राजा अपनी इच्छा के अनुसार रेगिस्तान में मीठे पानी की धाराएं बना सकते थे। संदेशवाहक ने ललितादित्य को आगाह किया कि उनकी कुछ ही इच्छाएं शेष हैं। इसलिए, उन्हें फल की आज्ञा देने जैसे तुच्छ अनुरोधों पर इन इच्छाओं को बर्बाद नहीं करना चाहिए।

कल्हण एक और कहानी लिखता है कि ललितादित्य का मंत्री चाणकुना जादूगर कनकवारा (सचमुच सोने की बारिश करने वाला) का भाई था। उन्होंने अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग करके राजा के खजाने में सोना पैदा किया। एक बार राजा की सेना पंचनदा देश (पंजाब के साथ पहचानी गई) में फंसी हुई थी, क्योंकि स्थानीय नदियां में पानी का स्तर उंचा था और सेना उन्हें पार नहीं कर पा रही थी। चाणकुना ने एक मणि नदी में फेंक कर माया की और नदी के बीच रास्ता बना दिया। इसके बाद माया से नदी में फेंकी गई मणि का प्राप्त किया और विभेदन समाप्त कर नदी को एक कर दिया। राजा ने चाणकुना से उनके पास उपलब्ध इस प्रकार की दो मणियों को उसे देने को कहा। इस पर चाणकुना ने ललितादित्य से सुगाता (बुद्ध) की एक मूर्ति मांगी, जिसे हाथी पर मगध से कश्मीर लाया गया था। राजा ने इस मांग को पूरा किया, और चाणकुना ने मूर्ति को अपने विहार में रख दिया। कल्हण दावा करता है कि यह मूर्ति उनके समय तक मौजूद थी। उनके अनुसार, चारों ओर लगे धातु के छल्ले साबित करते हैं कि इस मूर्ति ने हाथी पर लम्बी यात्रा तय की थी।

कल्हण का यह भी दावा है कि ललितादित्य ने अपने भाले (कुंतवाहिनी) से कई नहरों का भी निर्माण किया। ऐसी ही एक घटना के बारे में बताते हुए, कल्हण कहता है कि जब ललितादित्य विश्व-विजय में लगा हुआ था, एक घायल व्यक्ति उनके पास आया। उनके विभिन्न अंग और नाक कटे हुए थे। उन्होंने खुद को सिकता-सिंधु (बालू का महासागर) के प्रतिद्वंद्वी राजा के मंत्री के रूप में पेश किया। उन्होंने कहा कि उसे अपने राजा को ललितादित्य द्वारा आत्महत्या करने की युक्ति को स्वीकार करने की सलाह देने

के लिए दंडित किया गया था। ललितादित्य ने उस सिकता सिंधु के मंत्री से सिकता सिंधु के राजा को दंडित करने का वादा किया। साथ ही घायल मंत्री का स्वास्थ्य लाभ अपनी देखरेख में करवाया। मंत्री ने तब ललितादित्य को एक छोटे मार्ग से सिकता-सिंधु देश जाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार ललितादित्य की सेना पानी के बिना एक बंजर क्षेत्र में फंस गई। जब ललितादित्य की सेना प्यास से मरने की कगार पर थी, सिकता सिंधु के मंत्री ने खुलासा किया कि यह सब एक षड्यंत्र था। वास्तव में वह सिकता सिंधु के राजा के प्रति एकनिष्ठ था और ललितादित्य और उनकी सेना को गुमराह कर फंसाने के इरादे से यह षड्यंत्र रचा गया था। ललितादित्य ने घोषणा की कि वह अपने राजा के प्रति मंत्री की वफादारी से प्रभावित है, लेकिन उनकी योजना सफल नहीं होगी। कश्मीर सम्राट ने अपनी तलवार जमीन में उतार दी, जिससे पानी की एक धारा बाहर आ गई। वह फिर सिकता-सिंधु पहुंचा, जहां उन्होंने सिकता सिंधु के अंगहीन मंत्री का उनके राजा के सामने पेश कर दिया। कल्हण का उल्लेख है कि ललितादित्य के बारे में कई अन्य अद्भुत किवंदतियां उनके समय के दौरान मौजूद थीं, लेकिन वह उन सभी को राजतरंगिणी में शामिल नहीं कर सकते थे क्योंकि वह कथा के प्रवाह को तोड़ना नहीं चाहते थे।

(लेखक जाने माने इतिहासविद् हैं)

साभार <https://www.bhartiyad> से